प्रथम अध्याय

मोहन राकेश के जीवन का सामान्य परिचय

मोहन राकेश के जीवन का सामान्य परिचय --

जन्म --

किसी कृति को समझ लेने में कृतिकार का परिचय अवश्य ही सहायक होता है। यह दूसरी बात है कि अपने प्रिय लेखक की जीवन रेखा से परिचय पाने की जिज्ञासा पाठक के मन में अनायास होती है। स्वातंत्र्योत्तर सुप्रसिध्द लेखक मोहन राकेश का जन्म ८ जनवरी, १९२५ को अमृतसर में हुआ। सुश्री सुषमा अग्रवाल ने भी मोहन राकेश के जन्म स्थल और जन्म तिथि के बारे में यही लिखा है --

"मोहन राकेश का जन्म ८ जनवरी, १९२५ में अमृतसर में हुआ।"[१]

माता-पिता उनको मदनमोहन नाम से पुकारते थे। इनका वास्तविक नाम मदन मोहन गोगलानी था, परन्तु इन्होंने मदन तथा गोगलानी शब्दों को निर्वासित कर मोहन नाम को ही पसन्द किया और उसके आगे 'राकेश' जोड दिया। इस तरह वे मोहन राकेश नाम से ही जाने-जाने लगे।

उनके पिताजी का नाम श्री करमचंद गुगलानी था और वे पेशे से वकील थे। लेकिन साहित्य और संगीत में वे अधिक दिलचस्पी लेते थे। परिणामत: बालक मोहन पर भी इसका असर हुआ। मदनमोहन गुगलानी उर्फ मोहन राकेश ने अपने लेखन में इन प्रारंभिक प्रभावों को स्वीकार किया है।

परिवार --

राकेश का जन्म जिस परिवार में हुआ था वह परिवार मध्यवर्गीय था।

---

१ डॉ.सुश्री सुषमा अग्रवाल - मोहन राकेश - व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.२१।

परिवार की आर्थिक स्थिति संन्तोषप्रद नहीं थी। उनके पिताजी पेशे से वकील थे, और संस्कृत-साहित्य में विशेष रुचि रखते थे। मोहन को विरासत के रुप में संस्कृत का ज्ञान प्राप्त हुआ। पिता उनसे बेहद प्यार करते थे। किन्तु पिता का प्यार उनकी किस्मत में अधिक समय तक लिखा नहीं था। सोलह वर्ष की आयु में राकेश पिता के प्रेम से वंचित हो गये। सन १९४१ को उनके पिता का देहान्त हुआ।

अमृतसर में राकेश जिस घर में रहते थे वह किराये का घर था। मकान मालिक के लड़के ने राकेश के पिता की लाश तभी उठने दी जब कि उसका किराया अदा कर दिया गया। इस घटना से राकेश के परिवार की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। पिता की मृत्यु के पश्चात माँ-बहन और एक छोटे भाई का दायित्व राकेश पर ही पड़ा। राकेश की शामें अपने मित्रों के नाम होती थी। अपने मित्रों से आत्मियता का रिश्ता अधिकतर इसलिए था क्योंकि यह मित्र भी राकेशजी की तरह ईमानदार थे। राकेश की पत्नी अनीता कहती हैं --

> " इनमें अगर उनका कोई सबसे ज्यादा तक्लीफ देनेवाला लेकिन आत्मिय मित्र था तो वह एक मात्र कमलेश्वर ही थे। पता नहीं उन्होंने राकेशजी को क्या सुँघा कर रखा हुआ था। "[१]

बचपन --

जिस घर में राकेश का बचपन बीता वह सीलन से भरा हुआ तथा बदबूदार नलियों से घिरा रहता था। घर में अक्सर स्त्रियों में झगड़े हुआ करते थे। आर्थिक स्थिति भी अत्यन्त गिरी हुई थी। घर के वातावरण में राकेश का दम घुँटता था। दादी माँ की नजर में राकेश की माँ अच्छी नहीं थी अत: दोनों में अनबन थी। इस परिवार पर हमेशा ऋण का बोझ रहा करता था।

---

१ अनीता - राकेश - चंद सतरें और - पृ.८४।

शिक्षा -

यद्यपि राकेश का परिवार कर्ज में डूबा था फिर भी शिक्षापाने में उन्होंने कमी कसूर नहीं किया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में हुई। उच्चतम शिक्षा लाहोर के ओरीयंट कॉलेज में हुई इसी कॉलेज से इन्होंने शास्त्री की उपाधि ली और संस्कृत में एम.ए.किया। देश के विभाजन के बाद जालंदर में आकर बसे। हिन्दी में एम.ए.किया और वे प्रथम श्रेणी में प्रथम आये। पारिवारिक जिम्मेदारियों ने उन्हें उम्र से पहले प्रौढ बना दिया। बाईस वर्ष की आयु में ही वे अपने को बुजुर्ग अनुभव करने लगे और लेखन द्वारा अपना रास्ता खोजने लगे। अध्ययन के समय उनका मन अस्थिर और तनाव की स्थिति में रहता था। राकेश की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अत: शिक्षा के लिए पैसे का प्रबंध स्वयं उन्हीं को करना पडता था। डॉ.धनानन्द शर्मा `जदली` इस सम्बन्ध में ठीक ही लिखते हैं --

> " छात्रावस्था में राकेश ट्यूशन कर अपनी पढाई का खर्च चलाते थे। " [१]

नौकरी --

हिन्दी और संस्कृत में एम.ए.करने के पश्चात सन १९४९ में वे जालंधर के डी.ए.व्ही.कॉलेज में प्राध्यापक हो गऐ। राकेश ने उन बातों से कभी समझौता नहीं किया जो उन्हें गलत लगती थी। इस नौकरी में जब उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचानेवाले लोग उन्हें दिखाई दिये तब उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दिया। फिर शिमला के `विशप लाटन स्कूल` में नौकरी की, परन्तु यहाँ भी वही हुआ जो जालंधर के कालिज में हुआ था। अत: फिर उन्होंने त्यागपत्र दिया। परन्तु फिर डी.ए.व्ही.कालिज जालंधर में हिन्दी विभाग

---

१ डॉ.धनानन्द शर्मा - `जदली` - मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.२२।

के अध्यक्ष के रूप में उनको नियुक्त किया। लेखन का चक्कर तो दिमाग में था ही। अत: इस बार भी वे नौकरी से चिपके नहीं रहे। इस्तीफा देकर स्वतन्त्र रूप से लेखन करने लगे। सन १९६२-६३ में वे 'सारिका' पत्रिका के संपादक बन गये। सन १९६४ में फिर संपादक पद का इस्तीफा दिया और स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए मुक्त हो गये। जो व्यवस्था राकेश को पसन्द नहीं आयी वहाँ वे तनिक भी रुके नहीं रहे। उनका इस्तीफा मानो उनकी जेब में ही रहा करता था। डॉ.मीना पिंपळापुरे भी ठीक ही लिखती है --

> 'मोहन राकेश बार-बार नौकरियाँ छोड़ते हैं, पर यह कोई स्वैच्छिक वरण नहीं इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनमें प्रमुख है, उनका स्वाभिमान, जो पूरी तरह समर्पित नहीं हो पाता अथवा सम्पूर्ण समझौते के लिए तैयार नहीं होता।'[१]

विवाह --

राकेश जी का समग्र जीवन प्रेम की खोज की अनवरत यात्रा थी। राकेश को अपने जीवन में तीन विवाह करने पड़े। उनका वैवाहिक जीवन भी एक रोचक कहानी है। स्वच्छन्द व्यक्ति राकेश का प्रथम विवाह हुआ सुशीला से (सन १९५० को) यह विवाह राकेश के मन के अनुकूल नहीं था। उनकी पत्नी में बहुत अहं था। वह उनके बराबर पढ़ी लिखी थी। उनसे ज्यादा कमाती थी। अपनी स्वतंत्रता का उसे बहुत मान था। वह समझती थी कि किसी भी परिस्थिति का वह अकेली रहकर मुकाबला कर सकती है। बातचीत भी वह खुले मर्दाना ढंग से करती थी। नारी सुलभ हठ भी उसमें था। विवाह के बाद पहली रात को ही विवाह की असफलता के बीज बो दिये थे। उनकी पत्नी इस एहसास से आकाश पर उड़ी जा रही थी कि 'आखिर तुम्हें मेरे हठ के सामने झुकना पड़ा न।' अत: दोनों का साथ अधिक देर नहीं रह पाया और

---

१ डॉ.मीना पिंपळापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार - पृ.२१।

परिणाम विवाह विच्छेद में बदल गया । धीरे - धीरे राकेश लेखन में प्रसिध्दि पाने लगे थे । एक दिन 'पुष्पा' को राकेश ने अपनी पत्नी के रुप में चुन लिया । पुष्पा उनके एक मित्र की बहन थी, राकेश ने मित्र के घर में उसे कई बार देखा था । परन्तु राकेश का यह चुनाव भी गलत निकला । क्योंकि पुष्पाजी अधिक पढी-लिखी नहीं थी और राकेश को समझने की काबिलियत उसमें नहीं थी । राकेश की पहली पत्नी में हठ और अहं था तो दूसरी में दीनता थी । अत इस विवाह ने भी उनके मन को गहरी चोट पहुँचायी । उनकी दोनों शादियाँ टूट गई । डॉ.मीना पिंपळापुरे भी उनके विवाह के बारे में लिखती है --

> " पहला और दूसरा,दोनों विवाह असफल हुए और स्त्रियों के प्रति उनके मन में एक प्रकार का अजीब,संश्लिष्ट भाव देखा जा सकता है । " [१]

सन १९६३ को राकेश ने अनीता के साथ तीसरा विवाह किया । इस समय राकेश दिल्ली में 'सारिका' के संपादक थे । अनीता की माँ को यह रिश्ता मंजूर न था अत: उसने राकेश को धमकी दी किन्तु अनीता और राकेश विवाह बध्द हो ही गये । अनीता का साथ मिलने पर राकेश खुश हुऐ । उन्हें जिस घर की तलाश थी वह घर उन्हें मिल गया ।

मृत्यु --

अनीता के साथ शादी होने पर राकेश को जिस घर की तलाश थी वह घर उन्हें मिल तो गया किन्तु कुदरत का कानून मुहब्बत की बन्दिश से ऊपर होता है । दोनों का वैवाहिक जीवन अधिक समय तक सुखी नहीं रह पाया,चूँकि ३ दिसम्बर १९७२ को हृदयगति रुक जाने से राकेश ने इस साहित्य संसार से हमेशा के लिए विदा ली । उनकी जिन्दगी के बारे में उनकी पत्नी अनीता

---

१ डॉ.मीना पिंपलापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार - पृ.२४ ।

राकेश ठीक ही लिखती है -

" उस आदमी ने सिर्फ अपनी और अपनी ही शर्त पर जिन्दगी जी थी । " [१]

व्यक्तित्व --

मोहन राकेश का व्यक्तित्व कुछ अजीबसा है । वे अपने मन के अनुसार जिन्दगी जीने के कायल थे । जिन्दगी ने राकेश को बहुत तोडना चाहा । वे एक संवेदनशील और भावुक व्यक्ति थे । आडंम्बर से उन्हें नफरत थी । बनावट में उनका दम घुटता था । उनके जीवन में पहला आघात तब हुआ, जब कि पन्द्रह वर्ष की आयु में उनके पिताजी की मृत्यु हुई । उन्हें इस समय एक ठोस सहारे की आवश्यकता थी । वे किसी का बनकर रहना चाहते थे और किसी को अपना बनाकर रहना चाहते थे ।

उन पर दूसरा आघात तब हुआ जब उनकी पहलीशादी सुशीला से हुई थी । सन १९५० में उन्होंने विवाह कर लिया था । उनकी पत्नी में बहुत अहं था । वह उनके बराबर पढी लिखी थी । उनसे ज्यादा कमाती थी । उससे राकेश के जीवन में मानसिक यातनाओं और कुंठाओं का दौर शुरु हुआ । उनका छोटा भाई घर के तनावपूर्ण वातावरण से उबकर घर छोडकर बंबई चला गया ।

लेखन राकेश का एक मात्र सहारा बन गया था । यह सहारा अगर उन्हें न मिलता तो शायद वे खुदखुशी कर लेते । वे दिल्ली विश्व विद्यालय में अध्यापन कर रहे थे । खुशियाँ सजोने की उन्हें चाह थी । परन्तु जिंदगी ने उनका साथ नहीं दिया । वे दिल्ली छोडकर बंबई चले गये । लेकिन वहाँ भी नहीं जम पाये । वे 'सारिका' के कार्यालय में चले गये । उनकी पत्नी ने उन्हें वहाँ भी चैन की साँस नहीं लेने दी । उसने कार्यालय में जाकर उनके आत्मसम्मान

---

१ अनीता राकेश - चंद सतरें और पृ.१०१ ।

को आघात पहुँचाया, यहाँ तक कि गुंडोद्वारा उन्हें धम्मकाया गया। जो व्यक्ति करीब से राकेश को नहीं जानते वे उनपर लांच्छन लगाते कि राकेश बहुत घटिया आदमी है। परन्तु यह उचित नहीं है। वे जिसे अपना लेते थे उसके दु:ख स्वयं ओढ लेते थे। राकेश अपनी जेब दोस्तों के लिए खाली करनेवाले व्यक्ति थे। वे एक अच्छे दोस्त थे। मन से माउक थे। उनकी दोस्ती दिखावटी नहीं थी। अत: उनकी दोस्ती पर उनके दोस्तों को नाज था। सभी समझते थे कि राकेश उसका है, क्योंकि राकेश हरएक के सुख दु:ख के साथ जुडे रहते थे। अपने लेखन के साथ उन्होंने कभी समझोता नहीं किया। नौकरी ढाई सौ की हो या ढाई हजार की, यदि वह उनके लेखन में बाधा बनें तो तुरंत ठुकरा देते थे। नौकरियाँ छोडने के मामले में तो वे सचमुच बदनाम रहे थे। बंबई, सिमला, जालंदर, दिल्ली, कहाँ बँध पाये वे ? उत्तर है - कहीं नहीं। उनका अपनी पसंदी का क्रम था। राकेश के जीवन में उनके दोस्तों का जो स्थान था उसके लिए उन्होंने अनीता से कहा भी था --

> " मेरी जिंदगी में तुम्हारा स्थान तीसरा है। पहले नंबर पर मेरा लेखन है, दूसरे नंबर पर मेरे दोस्त हैं और तीसरे नंबर पर तुम हो। लेकिन तीनों वे मेरे लिए बहुत जरूरी है। " [१]

स्वभाव से ही वे बहुत ही मिलनसार थे। विनोदप्रिय थे। अपनी ईमानदारी के कारण वे बहुत सी गलत फहमियों के शिकार थे।

वे जीवन भर किसी के आधीन नहीं रहे। युनिव्हर्सिटी ने उन्हें पीएच.डी.के लिए छात्रवृत्ति देकर कार्य करने का प्रस्ताव रखा। हिन्दी विभाग में उच्चपद देना चाहा। कई कॉलेजों ने विभाग अध्यक्षता सौंप दी, आकाशवाणी ने अधिकारी पद में अच्छे वेतनपर अपनी ओर खिंचा, विभिन्न पत्रिकाओं में उन्हें संपादकत्व प्राप्त हुआ। परंतु उन्होंने सब को ठुकरा दिया। वे कहीं टिककर नहीं

---

१ सारिका, मार्च - १९७३ - पृ.९।

रहे। किसी के आश्रय में उनके स्वाभिमान को चोट पहुँचती थी और उनकी साहित्यिक प्रतिभा कुंठित होती थी।

कृतित्व —

राकेशजी का कृतित्व विविधताओं से विभूषित है। उनके द्वारा लिखित साहित्य निम्नांकित है।

१) नाटक

१) आषाढ का एक दिन — प्रकाशन - सन १९५८
२) लहरों के राजहंस — प्रकाशन - सन १९६३
३) आधे - अधूरे — प्रकाशन - सन १९६९
४) पैर तले की जमीन — प्रकाशन (यह मोहन राकेश का अधूरा नाटक है जिसे कमलेश्वर ने राकेश की पत्नी अनीता जी की मदत से पूर्ण किया है यह मोहन राकेश की मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ है।

२) एकांकी संग्रह —

१) अंडे के छिलके
२) प्यालियाँ टूटती है
३) बहुत बडा सवाल
४) सिपाही की माँ

३) कहानी संग्रह —

१) क्वार्टर
२) पहचान
३) वारिस।

ये तीन कहानीसंग्रह १९७२ में प्रकाशित हुये `क्वार्टर` कहानी संग्रह में कुल पंद्रह कहानियाँ संग्रहित है। `पहचान` में कुल २० और `वारिस` में ५४ कहानियाँ संग्रहित है।

४) निबंध -- (१) परिवेश।

५) यात्राविवरण (१) आखिरी चट्टान तक ।

६) डायरी - (१) मोहन राकेश की डायरी।

७) उपन्यास --

राकेश ने अपने जीवन काल में संख्या की दृष्टि से बहुत कम उपन्यास लिखे परंतु बदलते परिवेश के परिप्रेक्ष्य में लिखे गये उनके उपन्यासों का हिन्दी साहित्य में अपना अलग महत्व है। उन्होंने जो उपन्यास लिखे उनका नीचे उल्लेख मात्र किया जा रहा है। क्योंकि तीसरे अध्याय में इस पर स्वतंत्र रुप से विवेचन किया गया है।

१) अंधेरे बंद कमरे	प्रकाशन - १९६१
२) न आनेवाला कल	प्रकाशन - १९६८
३) अंन्तराल	प्रकाशन - १९७२

निष्कर्ष --

मोहन राकेश ने जीवन में कभी समझौता नहीं किया था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने अहं को बनाए रखा था राकेश जी में जबरदस्त आत्माभिमान, जिंदा दिली, जीवन के प्रति अटूट आस्था रही है। भीतर की पीडा को उन्होंने अपने साहित्य में मुखरित किया है। उन्होंने अपने छोटे से जीवन काल में कम लिखा। परंतु अधिक प्रसिध्दि पाई है।

मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के ऐसे लेखकों में से एक है, जिन्होंने साहित्य गंगा को समृध्द किया। मोहन राकेश के जीवन की यात्रा अमृतसर में शुरु हुई और दिल्ली में उसकी अचानक इतिश्री हुई। राकेश की जिन्दगी ने अनगिनत करवटें बदली, कभी प्रेम, पैसा और खुशियों की बहार आयी तो कभी गम, तनहाई की आँधी आयी। मोहन राकेश सबसे पहले एक कहानीकार उसके बाद उपन्यासकार तत्पश्चात एक सशक्त नाटककार के रुप में हिन्दी जगत के सामने आये सन १९५० से १९७२ तक के दो दशकों में उन्होंने अपने मौलिक साहित्य से हिन्दी साहित्य संसार को समृध्द किया।